मलिक मुहम्मद जायसी

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कवि मलिक मुहम्मद जायसी का परिचय

प्रश्न 1 (आसान). मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म स्थान कहाँ था?
उत्तर – जायस, अमेठी (उत्तर प्रदेश)

प्रश्न 2 (आसान). जायसी जी किस काव्यधारा के प्रमुख कवि माने जाते हैं?
उत्तर – सूफी प्रेममार्गी शाखा

प्रश्न 3 (मध्यम). जायसी जी के दो गुरुओं के नाम बताओ।
उत्तर – सैयद अशरफ और शेख बुरहान

प्रश्न 4 (कठिन). उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना कौन सी है और वह किस कथा पर आधारित है?
उत्तर – उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना 'पद्मावत' है, जो सिंहल देश की राजकुमारी पद्मावती और चित्तौड़ के राजा रत्नसेन के प्रेम की भारतीय लोककथा पर आधारित है।

» जायसी का साहित्य: पद्मावत और प्रेमाख्यान परंपरा

प्रश्न 5 (आसान). जायसी किस शाखा के कवि माने जाते हैं?
उत्तर – जायसी सूफी प्रेममार्गी शाखा के कवि माने जाते हैं।

प्रश्न 6 (आसान). 'पद्मावत' में मुख्य रूप से किन पात्रों की कथा है?
उत्तर – 'पद्मावत' में सिंहल देश की राजकुमारी पद्मावती और चित्तौड़ के राजा रत्नसेन के प्रेम की कथा है।

प्रश्न 7 (मध्यम). 'पद्मावत' को प्रेमाख्यान परंपरा का सर्वश्रेष्ठ काव्य क्यों कहा जाता है?
उत्तर – 'पद्मावत' में लौकिक प्रेम कथा के माध्यम से अलौकिक सत्ता और ईश्वर प्रेम का आभास कराया गया है, इसलिए इसे प्रेमाख्यान परंपरा का सर्वश्रेष्ठ काव्य माना जाता है।

प्रश्न 8 (कठिन). 'पद्मावत' की भाषा और काव्य-शैली पर प्रकाश डालिए।
उत्तर – 'पद्मावत' की भाषा ठेठ अवधी है। इसकी काव्य-शैली फारसी की मसनवी शैली और भारतीय दोहा-चौपाई शैली का मिश्रण है, जो अत्यंत प्रौढ़ और गंभीर है। इसमें लोकजीवन का व्यापक अनुभव झलकता है।

» जायसी की काव्य-शैली और भाषा

प्रश्न 9 (आसान). जायसी ने अपनी काव्य-रचना में किस छंद का प्रयोग किया है?
उत्तर – दोहा-चौपाई

प्रश्न 10 (आसान). जायसी की काव्य-भाषा कौन सी है?
उत्तर – ठेठ अवधी

प्रश्न 11 (मध्यम). जायसी की काव्य-शैली पर किस लोक-संस्कृति का प्रभाव है?
उत्तर – लोकजीवन का व्यापक अनुभव और लोक संस्कृति

प्रश्न 12 (कठिन). मसनवी शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
उत्तर – मसनवी शैली में कथा सर्गों या अध्यायों में बँधी नहीं होती, बल्कि बराबर चलती रहती है और इसमें स्थान-स्थान पर घटनाओं और प्रसंगों का उल्लेख शीर्षकों के रूप में होता है।

» पद्मावत के 'बारहमासा' अंश का परिचय

प्रश्न 13 (आसान). 'बारहमासा' का शाब्दिक अर्थ क्या है?
उत्तर – बारह महीने।

प्रश्न 14 (आसान). पद्मावत के 'बारहमासा' अंश में किस नायिका का वर्णन है?
उत्तर – नागमती का।

प्रश्न 15 (मध्यम). 'बारहमासा' अंश में नायिका नागमती का मुख्य भाव क्या है?
उत्तर – विरह, यानि पति से बिछड़ने का दुख और उसकी याद।

प्रश्न 16 (कठिन). जायसी ने 'बारहमासा' अंश में नागमती की विरह-दशा को किस तरह प्रस्तुत किया है, संक्षेप में बताइए।
उत्तर – जायसी ने 'बारहमासा' अंश में नागमती की विरह-दशा को साल के हर महीने के बदलते मौसम और प्रकृति के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया है, जिससे उसकी पीड़ा और भी गहरी और मार्मिक लगती है। उन्होंने अगहन, पूस जैसे ठंडे महीनों में उसकी तड़प को विशेष रूप से दर्शाया है।

» अगहन मास में नागमती का विरह-वर्णन

प्रश्न 17 (आसान). अगहन मास की क्या विशेषता बताई गई है?
उत्तर – अगहन मास में दिन छोटे और रातें लंबी हो जाती हैं।

प्रश्न 18 (आसान). नागमती को घर-घर में लोग क्या करते हुए दिखते हैं?
उत्तर – नागमती को हर घर में लोग गर्म कपड़े पहने और खुशियाँ मनाते दिखते हैं।

प्रश्न 19 (मध्यम). नागमती अपने शरीर की तुलना किससे करती है, और क्यों?
उत्तर – नागमती अपने शरीर की तुलना दीये की बाती से करती है, क्योंकि वह भी विरह की आग में जलकर धीरे-धीरे खत्म हो रही है, ठीक वैसे ही जैसे बाती जलती है।

प्रश्न 20 (कठिन). 'यह दुख दगध न जानै कंतू' इस पंक्ति में नागमती का कौन सा भाव प्रकट होता है?
उत्तर – इस पंक्ति में नागमती का यह भाव प्रकट होता है कि उसके पति को उसकी विरह-पीड़ा की गहराई का अंदाज़ा नहीं है, वह अपने पति की उदासीनता या अज्ञानता पर दुख प्रकट कर रही है।

» पूस मास में नागमती का विरह-वर्णन

प्रश्न 21 (आसान). पूस मास में नागमती का शरीर क्यों काँप रहा है?
उत्तर – पूस मास में कड़ाके की ठंड और विरह के कारण नागमती का शरीर काँप रहा है।

प्रश्न 22 (आसान). सूर्य किस दिशा में चला गया है, ऐसा नागमती को क्यों लगता है?
उत्तर – नागमती को लगता है कि सूर्य लंका की दिशा (दक्षिण) में चला गया है, जिससे उसे और ठंड महसूस होती है और उसका अकेलापन बढ़ता है।

प्रश्न 23 (मध्यम). 'बिरह सचान भँवै तन चाँड़ा' पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – इस पंक्ति का अर्थ है कि विरह रूपी बाज़ पक्षी नागमती के शरीर को 'चाँड़ा' यानी नोच-नोच कर खा रहा है, जिससे वह जीवित होते हुए भी मृत समान कष्ट झेल रही है। यह विरह की प्रचंडता का वर्णन है।

प्रश्न 24 (कठिन). पूस मास का विरह वर्णन अगहन के विरह वर्णन से किस प्रकार अधिक तीव्र है? दोनों में मुख्य अंतर क्या है?
उत्तर – अगहन में ठंड की शुरुआत और अकेलेपन की भावना बढ़ती है, जबकि पूस में ठंड अपनी चरम सीमा पर होती है ('थरथर तन काँपा', 'दारुन सीउ')। पूस में नागमती का शरीर विरह की अग्नि में जलकर इतना क्षीण हो गया है कि 'रकत ढरा माँसू गरा, हाड़ भए सब संख', जो अगहन के वर्णन में नहीं था। यानी पूस में पीड़ा शारीरिक और मानसिक रूप से और भी गहन हो जाती है।

» माघ मास में नागमती का विरह-वर्णन

प्रश्न 25 (आसान). माघ मास में नागमती के शरीर पर क्या पड़ता है?
उत्तर – पाला

प्रश्न 26 (आसान). नागमती अपने प्रिय को किस रूप में आने को कहती है?
उत्तर – सूरज बनकर ताप देने वाला

प्रश्न 27 (मध्यम). माघ मास में नागमती के आँसू की तुलना किससे की गई है?
उत्तर – माघ की वर्षा (महावट) के पानी से।

प्रश्न 28 (कठिन). माघ में 'विरह काल भएउ जड़काला' का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि माघ के महीने में विरह इतना तीव्र हो गया है कि वह मृत्यु के समान लगता है, मानो विरह ही यमराज बनकर आ गया हो।

» फागुन मास में नागमती का विरह-वर्णन

प्रश्न 29 (आसान). फागुन महीने में कैसी हवाएँ चलती हैं?
उत्तर – तेज़ हवाएँ, जिन्हें 'पवन झँकोरै' कहा गया है।

प्रश्न 30 (आसान). फागुन में सभी लोग क्या खेल रहे होते हैं?
उत्तर – फाग और चाँचरि।

प्रश्न 31 (मध्यम). नागमती का शरीर फागुन में कैसा हो गया था, और यह किस चीज़ का प्रतीक है?
उत्तर – उसका शरीर 'पियर पात' (पीले पत्ते) जैसा हो गया था, जो कमज़ोरी और अंत के करीब होने का प्रतीक है।

प्रश्न 32 (कठिन). फागुन के महीने में खुशियों के बावजूद नागमती का दुख क्यों बढ़ जाता है?
उत्तर – जब आसपास सब खुशियाँ मना रहे हों, तो अपनी उदासी और अकेलापन और ज़्यादा महसूस होता है। फागुन की तेज़ हवाएँ विरह की अग्नि को और भड़काती हैं, जिससे उसका दुख चौगुना बढ़ जाता है। यह 'मो कहँ भा जग दून उदास्' वाली स्थिति है।

» काव्य-सौंदर्य और अलंकार

प्रश्न 33 (आसान). अगर मैं कहूँ 'मेरा दिल कमल जैसा कोमल है', तो इसमें कौन सा अलंकार है?
उत्तर – उपमा अलंकार

प्रश्न 34 (आसान). जब कवि किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं, तो कौन सा अलंकार होता है?
उत्तर – अतिशयोक्ति अलंकार

प्रश्न 35 (मध्यम). 'पिय सौं कहेहु सँदेसड़ा, हे भौंरा! हे काग!' - इसमें कौन सा अलंकार है और काव्य-सौंदर्य क्या है?
उत्तर – यह मानवीकरण अलंकार है क्योंकि भौंरे और कौए से बात की जा रही है, जैसे वे इंसान हों। काव्य-सौंदर्य यह है कि नागमती अपनी पीड़ा में इतनी अकेली है कि वह पशु-पक्षियों से भी अपने प्रिय तक संदेश पहुँचाने की विनती कर रही है, जो उसकी विरह-वेदना की गहराई को दर्शाता है।

प्रश्न 36 (कठिन). 'काँपइ हिया जनु सीउ सतावा' - इस पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार और उससे उत्पन्न काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।
उत्तर – इस पंक्ति में 'जनु' शब्द आने से 'उत्प्रेक्षा' अलंकार है, जिसका अर्थ है 'ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो'। काव्य-सौंदर्य यह है कि यह पंक्ति नागमती के हृदय के काँपने को शीत के सताने जैसा बताकर उसकी शारीरिक और मानसिक पीड़ा को स्पष्ट करती है। इससे नागमती की दयनीय अवस्था और ठंड से उसकी बेबसी का सजीव चित्रण होता है।

» शब्दार्थ और टिप्पणी

प्रश्न 37 (आसान). 'निसि' का अर्थ क्या है?

उत्तर – रात

प्रश्न 38 (आसान). 'दूभर' का क्या मतलब है?

उत्तर – कठिन, मुश्किल

प्रश्न 39 (मध्यम). 'भा' शब्द का क्या अर्थ है, जैसे 'बिरह बाढ़ि भा दारुन सीउफ' में?

उत्तर – 'हो गया'

प्रश्न 40 (कठिन). 'सौर-सुपेती' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर – जाड़े के ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मलिक मुहम्मद जायसी का पूरा नाम क्या है और उन्हें 'जायसी' क्यों कहा जाता है?

› पहला कदम, कवि का पूरा नाम 'मलिक मुहम्मद जायसी' है।

› दूसरा कदम, उन्हें 'जायसी' इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे उत्तर प्रदेश के अमेठी ज़िले के पास 'जायस' नामक स्थान के रहने वाले थे।

› तीसरा कदम, यह उनके जन्मस्थान से मिली पहचान है।

उत्तर – कवि का पूरा नाम मलिक मुहम्मद जायसी है, और उन्हें 'जायसी' उनके जन्मस्थान 'जायस' के कारण कहा जाता है।

उदाहरण 2. मलिक मुहम्मद जायसी की 'पद्मावत' किस काव्य परंपरा का हिस्सा है और यह किस शैली में लिखी गई है?

› सबसे पहले पहचानो कि 'पद्मावत' एक प्रेम कहानी है, जिसमें प्यार के ज़रिए भगवान तक पहुँचने की बात है। ऐसी कहानियों को 'प्रेमाख्यान' कहते हैं।

› अब देखो इसकी बनावट कैसी है। जायसी जी ने इसे फारसी की 'मसनवी' शैली में लिखा है, जिसका मतलब है कि कहानी बिना अध्यायों में बंटे चलती रहती है। साथ ही, उन्होंने भारतीय काव्य की 'दोहा-चौपाई' छंद का भी इस्तेमाल किया है।

› इन दोनों बातों को जोड़कर उत्तर दो।

उत्तर – मलिक मुहम्मद जायसी की 'पद्मावत' 'प्रेमाख्यान परंपरा' का एक सर्वश्रेष्ठ प्रबंधकाव्य है। यह फारसी की 'मसनवी' शैली और भारतीय काव्य की 'दोहा-चौपाई' शैली के मेल से लिखी गई है।

उदाहरण 3. जायसी की भाषा और छंद-शैली की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

› पहला कदम, हम यह देखेंगे कि जायसी जी ने लिखने का कौन-सा 'फॉर्मेट' इस्तेमाल किया। वो है 'दोहा-चौपाई' छंद।

› दूसरा कदम, हम उनकी भाषा पर गौर करेंगे। जायसी जी ने 'ठेठ अवधी' भाषा का प्रयोग किया है, जिसमें स्थानीय बोलचाल के शब्द ज़्यादा होते हैं।

› तीसरा कदम, उनकी शैली पर ध्यान देंगे, जो 'मसनवी शैली' है और इसमें लोकजीवन का प्रभाव साफ दिखता है।

उत्तर – जायसी ने अपनी रचनाओं में मुख्यतः दोहा-चौपाई छंद का प्रयोग किया है। उनकी भाषा ठेठ अवधी है और काव्य-शैली मसनवी है, जिसमें लोकजीवन और लोक संस्कृति का गहरा प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

उदाहरण 4. 'बारहमासा' अंश में किस नायिका के विरह का वर्णन किया गया है और इसका मुख्य विषय क्या है?

› सबसे पहले, यह समझें कि 'बारहमासा' 'पद्मावत' का ही एक हिस्सा है।

› फिर यह याद करें कि इस अंश में जायसी जी ने किस पात्र के दुख को दिखाया है - यह नायिका 'नागमती' है।

› अंत में, विषय क्या है? यह पति 'रत्नसेन' के वियोग में नायिका नागमती का दुख और उसकी अलग-अलग महीनों में बदलती हुई विरह-दशा का वर्णन है।

उत्तर – 'बारहमासा' अंश में नायिका नागमती के विरह का वर्णन किया गया है। इसका मुख्य विषय पति से बिछड़ने के बाद, साल के अलग-अलग महीनों में नायिका की बढ़ती हुई पीड़ा और उसकी भावनात्मक दशा को दर्शाना है।

उदाहरण 5. नागमती अगहन मास में भ्रमरों और कौओं से अपने प्रिय को क्या संदेश भेजती है?

› पहले कविता की उस पंक्ति को देखें जहाँ भ्रमर और कौए का ज़िक्र है।

› पंक्ति है: 'पिय सौं कहेहु सँदेसड़ा, ऐ भँवरा ऐ काग।'

› इसके बाद की पंक्ति देखें जो संदेश का सार बताती है: 'सो धनि बिरहें जरि मुई, तेहिक धुआँ हम लाग।'

› इन पंक्तियों का अर्थ समझें: नागमती कहती है कि वह विरह की आग में जलकर मर गई है, और उसी का धुआँ भ्रमरों और कौओं को लगा है।

उत्तर – नागमती भ्रमरों और कौओं से कहती है कि वे उसके प्रिय से जाकर यह संदेश दें कि वह (नागमती) विरह की आग में जलकर मर चुकी है और उसी के धुएँ से वे काले हो गए हैं।

उदाहरण 6. कवि जायसी ने पूस मास में नागमती के विरह का वर्णन किस प्रकार किया है? 'रकत ढरा माँसू गरा' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

› पहले हम देखेंगे कि पूस का महीना कैसा होता है - बहुत ठंड वाला, जिसमें शरीर काँपता है ('थरथर तन काँपा')।

› फिर हम देखेंगे कि इस ठंड के साथ विरह कैसे जुड़ता है - 'बिरह बाढ़ि भा दारुन सीउ'। यानी विरह के कारण ठंड और भी असहनीय हो जाती है।

› नागमती को लगता है कि सूरज भी दक्षिण दिशा (लंका) की ओर चला गया है, जिससे धूप और कम हो गई है, और उसकी पीड़ा बढ़ गई है।

› अब 'रकत ढरा माँसू गरा' का अर्थ समझेंगे। इसका मतलब है कि विरह की अग्नि में जलते-जलते नागमती का खून सूख गया है, माँस गल गया है और हड्डियाँ शंख जैसी सफेद हो गई हैं। यह उसके अत्यधिक क्षीण हो चुके शरीर और गहरे दर्द का चित्रण है।

› अंत में, 'हाड़ भए सब संख' बताता है कि वह इतनी कमज़ोर हो चुकी है कि हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गई है।

उत्तर – जायसी ने पूस की कड़ाके की ठंड में नागमती के विरह को अत्यंत दारुण बताया है। उसके प्रियतम की अनुपस्थिति में शरीर ठंड से थरथराता है, और विरह की आग भीतर से उसे जलाती है। 'रकत ढरा माँसू गरा, हाड़ भए सब संख' का अर्थ है कि विरह के कारण नागमती का रक्त सूख गया है, माँस गल गया है और हड्डियाँ शंख के समान सफेद हो गई हैं, जो उसकी चरम शारीरिक व मानसिक पीड़ा को दर्शाता है।

उदाहरण 7. माघ मास में नागमती अपने प्रिय से किस प्रकार की सहायता चाहती है?

› नागमती को माघ में अत्यधिक ठंड और पाले से परेशानी हो रही है।

› वह अपने प्रिय को सूरज के समान ताप देने वाला मानती है।

› वह कहती है कि प्रिय के बिना इस कड़ाके की ठंड से मुक्ति नहीं मिलेगी।

› उसका प्रिय ही उसके यौवन रूपी फूल का भँवरा है।

उत्तर – नागमती अपने प्रिय से सूरज की तरह आकर उसे ताप देने और उसके यौवन रूपी फूल के भँवरे के रूप में आने की विनती करती है, ताकि उसे ठंड और विरह दोनों से मुक्ति मिल सके।

उदाहरण 8. फागुन मास में नागमती के विरह वर्णन की मुख्य बात क्या है?

› कवि जायसी ने दिखाया है कि फागुन में तेज़ हवाएँ चलती हैं।

› ये हवाएँ विरह की अग्नि को और ज़्यादा भड़का देती हैं, जिससे नागमती का दुख चौगुना बढ़ जाता है।

› सभी लोग होली और फाग के खेल में मस्त हैं, लेकिन नागमती को यह उल्लास और ज़्यादा अकेलापन महसूस कराता है।

› उसका शरीर पीले पत्ते जैसा कमज़ोर हो गया है, और वह चाहती है कि उसका शरीर जलकर राख हो जाए और प्रिय के मार्ग में बिखर जाए।

उत्तर – फागुन मास का उल्लास और तेज़ हवाएँ नागमती के विरह को और तीव्र कर देती हैं, और वह अपने प्रिय के रास्ते में राख बनकर बिखर जाने की इच्छा रखती है।

उदाहरण 9. 'रकत ढुरा माँसू गरा, हाड़ भएउ सब संख।' इस पंक्ति का काव्य-सौंदर्य और अलंकार बताइए।

› पहले पंक्ति का अर्थ समझो: नागमती कहती है कि विरह के कारण उसका रक्त बह गया, माँस गल गया और हड्डियाँ शंख जैसी हो गईं।

› अलंकार पहचानो: यहाँ 'हाड़ भएउ सब संख' में नागमती की हड्डियों को शंख जैसा बताया गया है। शंख भी सफेद और अंदर से खोखला होता है। जब किसी वस्तु की तुलना किसी दूसरी वस्तु से की जाती है और 'जैसे', 'सम' आदि शब्द न हों, बल्कि सीधा रूप दे दिया जाए, तो वह 'रूपक' अलंकार हो सकता है। पर यहाँ इतना ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर बोला गया है कि रक्त बह गया, माँस गल गया, तो यह 'अतिशयोक्ति' अलंकार भी है।

› काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करो: इस पंक्ति में नागमती की विरह-वेदना की पराकाष्ठा दिखाई गई है। कवि ने उसकी शारीरिक दुर्बलता को इतना बढ़ा-चढ़ाकर बताया है कि पाठक को उसकी पीड़ा का अनुमान हो जाए। यह अतिशयोक्ति अलंकार के कारण ही संभव हुआ है। शब्दों का चयन भी ऐसा है कि एक गहन करुणा का भाव उत्पन्न होता है।

उत्तर – इस पंक्ति में 'अतिशयोक्ति' अलंकार है, क्योंकि नागमती के विरह-दर्द में शारीरिक क्षय को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया गया है। इसका काव्य-सौंदर्य नागमती के असहनीय विरह-दर्द और शारीरिक दुर्बलता का अत्यंत मार्मिक चित्रण है, जो पाठक के मन में करुणा जगाता है।

उदाहरण 10. जायसी की कविता में 'रकत ढरा माँसू गरा' पंक्ति में 'रकत' और 'गरा' शब्दों के अर्थ बताओ।

› सबसे पहले 'रकत' शब्द पर ध्यान दो। यह हमारी हिंदी के किस शब्द से मिलता-जुलता लग रहा है?

› हाँ, बिलकुल सही! 'रक्त' से मिलता है, जिसका अर्थ 'खून' होता है।

› अब 'गरा' पर आओ। 'गरा' शब्द 'गलना' या 'घुलना' से आया है।

› तो 'गरा' का अर्थ होगा 'गल गया' या 'घुल गया'।

› इस तरह, पूरी पंक्ति का अर्थ हुआ 'खून बह गया, मांस गल गया'।

उत्तर – 'रकत' का अर्थ 'खून' और 'गरा' का अर्थ 'गल गया' है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• जायसी की काव्य-शैली और भाषा से संबंधित प्रश्न बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर आते हैं, खासकर मसनवी शैली और ठेठ अवधी भाषा पर ध्यान देना।

• इस अंश से नायिका नागमती की विरह-दशा और विभिन्न महीनों में उसकी भावनाओं पर आधारित प्रश्न ज़रूर आते हैं, तो ध्यान से पढ़ना।

• इस खंड से नागमती की विरह-दशा का वर्णन और 'पिय सौं कहेहु सँदेसड़ा...' जैसी पंक्तियों की व्याख्या अक्सर बोर्ड परीक्षा में पूछी जाती है, इसे ध्यान से पढ़ना।

• इस खंड से 'विरह सचान' और 'रकत ढरा माँसू गरा' जैसी पंक्तियों की व्याख्या बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछी जाती है, ध्यान से पढ़ना।

• बोर्ड परीक्षाओं में शब्दार्थ से सीधे प्रश्न नहीं आते, लेकिन अगर तुम कविता के शब्दों का सही अर्थ समझोगे तो व्याख्या वाले प्रश्नों में पूरे नंबर ला पाओगे।

एक नज़र में रिवीज़न

› मसनवी शैली, दोहा-चौपाई, ठेठ अवधी भाषा, लोकजीवन का प्रभाव।

› नागमती का पति-विरह 'बारहमासा' में हर माह वर्णित।

› अगहन में नागमती का विरह-ताप, दिन-रात का प्रभाव, प्रिय को संदेश।

› पूस मास: कड़ाके की ठंड, विरह से तन-मन क्षीण, 'रकत ढरा माँसू गरा'

› कठिन शब्दों के अर्थ जानने से कविता का भाव स्पष्ट होता है।